4. लेन-देन सिद्धांत बनाम नकदी शेष सिद्धांत
(TRANSACTION THEORY *VS.* CASH BALANCE THEORY)

फिशर के लेन-देन सिद्धांत और केम्ब्रिज के नकदी शेष सिद्धांत में कुछ समानताएं एवं असमानताएं पाई जाती हैं। इनका विवेचन इस प्रकार किया गया है—

1. समानताएं (Similarities)

दोनों सिद्धातों में निम्न समानताएं हैं :

1. समान निष्कर्ष (Same Conclusion)—फिशर और केम्ब्रिज विवरण समान निष्कर्षों पर पहुंचते हैं कि कीमत स्तर और मुद्रा की मात्रा में सीधा और समानुपात संबंध होता है तथा मुद्रा के मूल्य और मुद्रा की मात्रा के बीच विपरीत अनुपाती संबंध पाया जाता है।

2. समान समीकरण (Similar Equations)—दोनों दृष्टिकोण समान समीकरणों का प्रयोग करते हैं। फिशर का समीकरण $P=MV/T$, राबर्ट्सन के समीकरण $P=M/kT$ के समान है। फिर भी, दोनों में केवल अंतर दो चिह्नों, V और k, में है जो एक दूसरे के व्युत्क्रम (reciprocal) हैं। जबकि $V=1/k$ और $k=1/V$। यहां V, व्यय करने की दर को व्यक्त करता है और k मुद्रा की मात्रा को जो लोग नकदी शेषों के रूप में रखना चाहते हैं या खर्च करना नहीं चाहते हैं। क्योंकि ये दोनों चिह्न एक दूसरे के व्युत्क्रम हैं, इसलिए दोनों समीकरणों के अंतरों का इस प्रकार सामंजस्य किया जा सकता है: k के स्थान पर $1/V$ का राबर्ट्सन के समीकरण में स्थानापन्न करके और V के स्थान पर फिशर के समीकरण में $1/k$ का स्थानापन्न करके।

3. मुद्रा समान तत्त्व के रूप में (Money as the Same Phenomenon)—दोनों दृष्टिकोणों में मुद्रा की कुल मात्रा को दिए गए निम्न चिह्न एक ही तत्त्व को व्यक्त करते हैं। फिशर के समीकरण में $MV+M'V'$ पीगू और राबर्ट्सन के समीकरणों में M और केन्ज के समीकरण में n मुद्रा की कुल मात्रा को व्यक्त करते हैं।

Scanned with CamScanner

2. असमानताएं (Dissimilarities)

उपरोक्त समानताओं के बावजूद दोनों दृष्टिकोणों में बहुत-सी असमानताएं जाती हैं—

1. मुद्रा के कार्य (Functions of Money)—दोनों विवरण मुद्रा के विभिन्न कार्यों पर बल देते हैं। फिशर का दृष्टिकोण विनिमय के माध्यम कार्य पर बल देता है, जबकि केम्ब्रिज दृष्टिकोण मुद्रा के मूल्य-संचय कार्य पर बल देता है।

2. प्रवाह और स्टॉक (Flow and Stock)—फिशर के सिद्धांत में मुद्रा प्रवाह धारणा है, जबकि केम्ब्रिज सिद्धांत में यह स्टॉक धारणा है। पहला समयावधि से संबद्ध है और दूसरा निश्चित समय से।

3. V और k भिन्न (V and k Different)—दोनों विवरणों में V और k चिह्नों के अर्थ भिन्न हैं। फिशर के समीकरण में V व्यय की दर को व्यक्त करता है और राबर्ट्सन के समीकरण में k नकदी शेषों को व्यक्त करता है जिसे लोग अपने पास रखना चाहते हैं। पहला चलन की लेन-देन गति पर बल देता है और दूसरा आय गति पर।

4. कीमत-स्तर की प्रकृति (Nature of Price Level)—फिशर के समीकरण में P सभी वस्तुओं और सेवाओं के औसत कीमत स्तर को व्यक्त करता है। परन्तु केम्ब्रिज समीकरण में P अन्तिम या उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों को व्यक्त करता है।

5. T की प्रकृति (Nature of T)—फिशर के समीकरण में T मुद्रा से विनिमय की गई वस्तुओं और सेवाओं की कुल मात्रा को व्यक्त करती है, जबकि केम्ब्रिज विवरण में यह मुद्रा से विनिमय की गई अन्तिम या उपभोक्ता वस्तुओं को व्यक्त करती है।

6. मुद्रा के लिए मांग और पूर्ति पर बल (Emphasis on Demand and Supply for Money)—फिशर का दृष्टिकोण मुद्रा की पूर्ति पर बल देता है, जबकि केम्ब्रिज दृष्टिकोण मुद्रा की मांग और पूर्ति दोनों पर बल देता है।

7. प्रकृति में भिन्न (Different in Nature)—दोनों विवरण प्रकृति में भिन्न हैं। फिशर का विवरण यांत्रिक है क्योंकि यह इस बात की व्याख्या नहीं करता कि V में परिवर्तन कैसे P में परिवर्तन लाते हैं। दूसरी ओर, केम्ब्रिज विवरण वास्तविक है क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक घटकों का अध्ययन करता है जो k को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

इन भिन्नताओं के कारण ही हेन्सन ने लिखा, "यह सत्य नहीं है, जैसा कि अक्सर कहा जाता है कि नकदी शेष समीकरण केवल मुद्रा सिद्धांत के नए बीजगणितीय वेश में है।"

5. नकदी शेष सिद्धांत की लेन-देन सिद्धांत पर श्रेष्ठता (SUPERIORITY OF CASH BALANCE THEORY OVER TRANSACTIONS THEORY)

मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के विषय में फिशर के लेन-देन दृष्टिकोण की अपेक्षा केम्ब्रिज नकदी शेष दृष्टिकोण कई दृष्टियों से श्रेष्ठ है। उन पर नीचे विचार किया जा रहा है—

1. तरलता अधिमान सिद्धांत का आधार (Basis of Liquidity Preference Theory)—नकदी शेष सिद्धांत मुद्रा की पूर्ति, जो किसी निश्चित समय पर दी हुई होती है, पर बल देने की बजाय नकदी शेष धारण करने के महत्त्व पर बल देता है। इस प्रकार इसका परिणाम यह हुआ कि केन्ज़ ने अपने

Scanned with CamScanner

तरलता अभिमान सिद्धान्त तथा ब्याज की दर के सिद्धांत का प्रतिपादन किया और मुद्रा सिद्धांत का मूल्य एवं उत्पादन सिद्धांत के साथ समन्वय किया।

2. पूर्ण सिद्धांत (Complete Theory)—मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के लेन-देन सिद्धांत विवरण की अपेक्षा नकदी शेष सिद्धांत विवरण इसलिए श्रेष्ठ है कि नकदी शेष सिद्धांत मुद्रा की मांग तथा पूर्ति द्वारा मुद्रा का मूल्य निर्धारित करता है। अत: यह पूर्ण सिद्धांत है। परन्तु लेन-देन सिद्धांत में मुद्रा के मूल्य का निर्धारण कृत्रिम रूप से मूल्य के सिद्धांत से अलग कर दिया गया है।

3. चलन वेग का त्याग (Discards Velocity of Circulation)—लेन-देन के सिद्धांत की अपेक्षा नकदी शेष सिद्धांत इसलिए श्रेष्ठ है कि इसमें मुद्रा के चलन वेग की धारणा को एकदम रद्द कर दिया गया है जिससे 'इसके पीछे लोगों के निहित उद्देश्य तथा निर्णय अस्पष्ट हो जाते हैं।'

4. अल्पकाल से संबद्ध (Related to Short Period)—परिमाण सिद्धांत के लेन-देन रूपान्तर की अपेक्षा नकदी शेष रूपांतर अधिक वास्तविक है क्योंकि यह अल्पावधि से सम्बन्ध रखता है जबकि लेन-देन रूपान्तर दीर्घावधि से सम्बन्ध रखता है। जैसा कि केन्ज ने लक्ष्य किया, "हो सकता है कि दीर्घकालीन में तो हम सब मर ही चुके हों।" इसलिए दीर्घकाल में मुद्रा की मात्रा तथा कीमत-स्तर के सम्बन्ध का अध्ययन अवास्तविक है।

5. सरल समीकरण (Simple Equation)—नकदी शेष समीकरण में अन्तिम वस्तुओं में सम्बन्धित लेन-देन ही शामिल हैं जहां P अन्तिम वस्तुओं के स्तर को व्यक्त करता है। दूसरी ओर लेन-देन समीकरण में P के अन्तर्गत सभी प्रकार के लेन-देन शामिल हैं। इससे वास्तविक कीमत स्तर निर्धारित करने में कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। इसलिए लेन-देन समीकरण की अपेक्षा नकदी शेष समीकरण अधिक सरल तथा यथार्थिक है।

6. नये समीकरण (New Formulations)—केम्ब्रिज समीकरण लोगों के द्वारा धारित नकदी शेषों को आय-स्तर का फलन मानता है। लेन-देन समीकरण के V (मुद्रा के चलन वेग) के मुकाबले नकदी शेष समीकरण में आय (Y अथवा R अथवा T अथवा O) रखने से नकदी शेष समीकरण यथार्थिक बन गया है जिससे मुद्रा के सिद्धांत में नए निरूपण संभव हो सके हैं। "यह लक्ष्य करता है कि कीमत-स्तर में परिवर्तनों के माध्यम से, अथवा वास्तविक उत्पादन में परिवर्तनों के माध्यम से अथवा एक साथ दोनों से माध्यम से मुद्रा की आय के स्तर में परिवर्तन हो सकते हैं।"

7. व्यापार-चक्र की व्याख्या (Explains Trade Cycles)—हेन्सन मानता है कि चक्रीय उतार-चढ़ाव को समझने के लिए फिशर के समीकरण में V की अपेक्षा केम्ब्रिज समीकरण में k बेहतर है। उसके मतानुसार, "यदि मुद्रा रखने की इच्छा प्रबल तथा आकस्मिक परिवर्तन हो जाते हैं, जो कि k में होने वाले परिवर्तनों में व्यक्त होते हैं, परिणामत: आय तथा कीमतों के स्तर में विशाल तथा तीव्रगामी परिवर्तन हो सकते हैं। केम्ब्रिज समीकरण के R में होने वाला विचलन (shift) ऊपर या नीचे की ओर गति प्रारम्भ कर सकता है।" उदाहरण के लिए जब कम व्यावसायिक प्रत्याशाओं के कारण k (कुल वास्तविक आय का वह अंश जिसे लोग नकदी शेष के रूप में अपने पास रखना चाहते हैं) बढ़ता है, तो कीमत-स्तर गिर जाता है और k गिरता है तो कीमत-स्तर बढ़ जाता है।

8. मुद्रा-मांग की विस्तृत धारणा (Broader Concept of Money-Demand)—केम्ब्रिज विवरण में मुद्रा की मांग की धारणा फिशर के विवरण से अधिक विस्तृत है, जिसमें मुद्रा की मांग विनिमय माध्यम और मूल्य संचय दोनों रूपों में ली गई है।

Scanned with CamScanner

9. व्यक्तिपरक घटकों का अध्ययन (Study of Subjective Factors)—उपर्युक्त तथ्यों से यह कहा जा सकता है कि फिशर के समीकरण में V यान्त्रिक है जबकि केम्ब्रिज समीकरण में k यथार्थिक है। k में होने वाले परिवर्तनों के पीछे विद्यमान आधुनिक व्यक्तिपरक कारणों के परिणामस्वरूप मुद्रा सिद्धांत में इस तरह के घटकों का अध्ययन हुआ है जैसे कि प्रत्याशाएं, अनिश्चितता, तरलता के लिए उद्देश्य और ब्याज की दर। इस दृष्टि से यह कहना तर्कसंगत है कि "केम्ब्रिज समीकरण हमें विनिमय के समीकरण द्वारा व्यक्त पुन:रुक्ति (tautology) से आर्थिक व्यवहार की ओर ले जाता है।"

10. सभी परिस्थितियों में लागू (Applicable under all Circumstances)—फिशर का सिद्धांत केवल पूर्ण रोजगार में ही लागू होता है। परन्तु नकदी शेष सिद्धांत सभी परिस्थितियों में लागू होता है चाहे पूर्ण रोजगार हो अथवा अपूर्ण रोजगार।

Scanned with CamScanner